# हाथों का ज़िना

मिनजानिब:
रज़वी टीम, इण्डिया

मुसन्निफ
अनवर रज़ा खान क़ादरी

## हम्द व सना

## बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

## नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

*ऐ अल्लाह, तेरी जात बेमिस्ल व यकता है, तू हमेशा से है, हमेशा रहेगा। तू एक है, पाक है, तू ही इबादत के लायक है। तू ही सारी चीजों को बनाने वाला है। तू ही सारे जहां का रब है। या अल्लाह तू मेरा खुदा, मैं तेरा बंदा, तूने मुझे इबादत के लिए बनाया और कुरआन मेरे हिदायत के लिए उतारा, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तरीका ए सुन्नत के लिए भेजा, वलियों का सिलसिला निसबत और मोहब्बत के लिए कयामत तक जारी रखा ताकि मैं कुरआन से हिदायत पाऊँ, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुन्नतों को अपनाऊं और वलियों से निसबत और मोहब्बत करने वाला बन जाऊं, ऐ मेरे रब तेरा एहसाने अज़ीम है की आदम अलैहिस्लाम को अपने कुदरत वाले हाथ से बनाया और उनकी औलाद हमे बनाया और सबसे बड़ा एहसान ये है कि जिस हबीब को तूने अपने नूर की तजल्ली से बनाया उसका उम्मती हमे बनाया यानी अशरफुल मखलुकात बनाया और शुक्र है तेरी सारी नेमतों का जिसे मैं शुमार नहीं कर सकता। या अल्लाह तुझ से अज़ीम कोई नही।*

*दरूद व सलाम हो उस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनाहगार उम्मतियों का नबी बनाया दरूद व सलाम हो असहाब पर और नबी के आल पर जिनका सिलसिला तूने कयामत तक जारी रखा, और सलामती हो उन तमाम मोमिनो मोमिनात पर जिन्होंने तुझे राज़ी किया।*

# फेहरिस्त

मेडिकल साइंस क्या कहती है:



शर्मगाह की हिफ़ाज़त

# पेशे लफ्ज़

आज जो बेहयाई और दीन से बेज़ारी आम है इसके नताइज निहायत ही ख़तरनाक है जो किसी से छुपे नहीं हैं। बेहयाई का बाज़ार गर्म है। औरतों का चुस्त और अधूरा लिबास मुआशरे में सिर्फ बेहयाई फैलाने के लिये है, लोग बड़ी आसानी से गुनाह करके निकल जा रहे है, लेकिन अल्लाह त'आला का अज़ाब भी दूर नहीं । अब भी मोहलत है इस फुरसत की घड़ी को ग़नीमत समझो और इस्लाम और अहकामे इसलाम की पाबन्दी करो, दुश्मन को पहचानो और उसकी दोस्ती से बचो। अगर कयामत के मैदान में अल्लाह तआला अपनी बारगाह में खड़ा करके यह पूछले कि दारूल अमल में मेरे हबीब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अज़मत तुम्हारे दिलों में ज़्यादा थी या फानी दुनिया मुहब्बत, तो क्या जवाब दोगे?

नफ़्सानी ख्वाहिश वह मुसीबत है कि जब वह ग़ालिब आती है तो न अक़्ल काम करती है और न इल्म। यह शैतान का एक बहुत बड़ा हथियार है। इसलिये रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी उम्मत की तालीम के लिये अक्सर बारगाहे इलाही में यह दुआ फरमाते (हज़रते उम्मे सलमा रदीअल्लाहु त'आला अन्हा रावी हैं) कि ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ अपने कान, आंख और दिल के शर खतरात से और अपनी मनी के शर से।

एक और रिवायत में यह अल्फाज़ आए हैं, **ऐ अल्लाह मैं सवाल करता हूँ कि मेरे दिल को पाक कर और मेरी शर्मगाह की हिफाज़त फरमा।**

# किताब लिखने की वजह

अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से मुझ गुनहगार को तौबा नसीब हुई और दुनिया की चाहत दिल से जाती रही। मैंने चाहा कि अल्लाह के बंदों को "नेकी है हुक्म देना और गुनाहों से रोकना" चाहिए। इस मिशन पर काम करना चाहा। अल्लाह की तौफ़ीक से मैं बुजुर्गाने दीन से वाबस्ता हुआ। फिर उलमाए अहले सुन्नत व जमात (सुन्नी हनफ़ी बरेलवी) की कुतुब को पढ़ना शुरू किया और अभी भी तालिबे इल्मो अमल हूँ। फिर मुआशरे के हालात और मुसलमानों की जिहालत को देखते हुए दौर की ज़रूरत के मुताबिक किताबें लिखना शुरू की। किताब जो आपके हाथ में है, इसे लिखने का मक़सद येह है कि क़ौम के नवजवानो की इस्लाह हो, जवानी की हिफाज़त हो। आज बेहयाई का दौर दौरा है, पुरी दुनिया मे शैतानी हुकूमत है, शैतान अपना काम बेहयाई के जरिये से कर रहा है, अगर कोई ऑफलाइन गुनाह से बचा है तो ऑनलाइन गुनाह से नही बच पा रहा यानी नंगी तस्वीरों को देख कर अपनी शर्मगाह का गलत इस्तेमाल कर रहा है। जबकि हदीस में आया है कि शर्मगाह अमानत है और उसकी हिफाज़त करने का हुक्म फ़रमाया गया। लेकिन शैतान इस अमानत में ख़यानत कराने में लगा हुआ है, कई क़ौमें बेहयाई की वजह से हलाक हुईं। इंशा अल्लाह किताब जवानों के लिए लिए मुफ़ीद साबित होगी।

आपका ख़ादिम : अनवर रज़ा खान क़ादरी (रज़वी टीम)

(W) 9534124663, 30 अगस्त 2022

## शैतान बेहयाई का हुक्म देता है

**अल्लाह फ़रमाता है :** शैतान तुम्हें अन्देशा (आशंका) दिलाता है मोहताजी का और हुक्म देता है बेहयाई का और अल्लाह तुमसे वादा फ़रमाता है बख़्शिश(इनाम) और फ़ज़्ल का और अल्लाह वुसअत (विस्तार) वाला इल्म वाला है। ( सूरह बक़रह, आयत न. 268)

## शैतान बेहयाई और बुरी ही बात बताएगा

**अल्लाह फ़रमाता है** : ऐ ईमान वालो शैतान के क़दमों पर न चलो, और जो शैतान के क़दमों पर चले तो वह तो बेहयाई और बुरी ही बात बताएगा। (सुरहः नूर, आयत न. 21)

## बेहयाइयों के पास न जाओ

**अल्लाह फ़रमाता है** : हम तुम्हें और उन्हें सबको रिज़्क़ देंगे और बेहयाइयों के पास न जाओ जो उनमें खुली हैं और जो छुपी है। (सुरहः अनाम , आयत न.151 )

## बेहयाइयां हराम है

**अल्लाह फ़रमाता है** : तुम फ़रमाओ, मेरे रब ने तो बेहयाइयां हराम फ़रमाई हैं जो उनमें खुली हैं और जो छुपी। (सुरहः आ'राफ, आयत न. 33)

## बदकारी बहुत ही बुरी राह है

**अल्लाह फ़रमाता है** : बदकारी के पास न जाओ बेशक वह बेहयाई है और बहुत ही बुरी राह।(सुरह बनीइसराईल,आयत32)

## निगाह और शर्मगाह की हिफाज़त :

कुरआन में अल्लाह त'आला इरशाद फरमाता है: मुसलमान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें यह उनके लिये बहुत सुथरा है, बेशक अल्लाह को उनके कामों की ख़बर है (सुरह नूर, आयत न. 30)

## शर्मगाह अमानत है

इब्ने उमर रदीअल्लाहु अन्हुमा का क़ौल है कि सब से पहले अल्लाह तआला ने इन्सान की शर्मगाह को पैदा किया और फरमाया- यह अमानत है जो मैं तुझे दे रहा हूं, उसे बे-राह रवी (गलत इस्तेमाल) से बचाना। अगर तू ने उस की हिफाजत की तो मैं तेरी हिफाजत करूंगा। लिहाजा शर्मगाह अमानत है, कान अमानत है, जबान अमानत है, पेट अमानत है, हाथ और पैर अमानत हैं और जिस में अमानत नहीं उस का ईमान नहीं । (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 13)

## निगाह झुका कर शर्मगाह की हिफाज़त:

चुनाँचे रब्बे जुल्जलाल इरशाद फ़रमाता है:

कुरआन: "मुसलमान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें यह उनके लिए बहुत

सुथरा है, बेशक अल्लाह को उनके कामों की ख़बर है और मुसलमान औरतों को हुक्म दो अपनी निगाहें नीची रखें और पारसाई की हिफाज़त करें और अपना बनाव न दिखाएं मगर जितना खुद ही ज़ाहिर है और दुपट्टे अपने गिरेबानों पर डाले रहें। (सूरह नूर)

## कुफ्फ़ार शैतान के मददगार

**अल्लाह फ़रमाता है** : काफ़िर (यहूदी, नसारा और हिन्दू) अपने रब के मुक़ाबिल शैतान को मदद देता है। (सुरहः फुरक़ान, आयत न.55 )

काफिर ही है जिन्होनें नंगी विडियो इन्टरनेट में अपलोअड कर रखी हैं। पहले के दौर में अंग्रेज़ अपनी बेटियों को मुसलमानो के पास भेज कर अपने जाल में फंसाता था मगर अब वो काम नेट के ज़रिए कर रहा है। अफसोस आज का मुसलमान अल्लाह की नाफरमानी करते थकता नहीं । जिस काम से मना फ़रमाया गया उसी काम को शौक़ और मज़े से करता है और और बेहयाई की हद पार कर गया है। सुन्नत को छोड़ कर ग़ैर मुस्लिमों का तरीक़ा अपना लिया है और काफिरों के साथ शैतान की मदद करता है। अल्लाह का रिज़्क़ खाकर, उसकी ज़मीन में रहकर पैरवी शैतान की कर रहा है।

## शैतान बद फे़'ली करना सीखा दिया

**हिकायत** : शहरे सदूम की बस्तियां बहुत आबाद और निहायत सर सब्ज़ो शादाब थी और वहां तरह तरह के अनाज और क़िस्म क़िस्म के फल और मेवे बहुत तादाद में पैदा होते थे। शहर की खुशहाली की वजह से अकषर जा बजा के लोग मेहमान बन कर

इन आबादियों में आया करते थे और शहर के लोगों को इन मेहमानों की मेहमान नवाज़ी का भार उठाना पड़ता था। इस लिये इस शहर के लोग मेहमानों की आमद से बहुत ही कबीदा खातिर और तंग हो चुके थे। मगर मेहमानों को रोकने और भगाने की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी। इस माहोल में इब्लीसे लईन एक बूढ़े की सूरत में नुमूदार हुवा। और इन लोगों से कहने लगा कि अगर तुम लोग मेहमानों की आमद से नजात चाहते हो तो इस की येह तदबीर है कि जब भी कोई मेहमान तुम्हारी बस्ती में आए तो तुम लोग ज़बरदस्ती उस के साथ बद फ़े'ली करो। चुनान्चे, सब से पहले इब्लीस खुद एक खूब सूरत लड़के की शक्ल में मेहमान बन कर इस बस्ती में दाखिल हुवा। और इन लोगों से खूब बद फे' ली कराई। इस तरह येह फ़े'ले बद (मर्द, मर्द के साथ बदकारी/ गेईज़्म) इन लोगों ने शैतान से सीखा। फिर रफ़्ता रफ़्ता इस बुरे काम के येह लोग इस क़दर आदी बन गए कि औरतों को छोड़ कर मर्दों से अपनी शहवत पूरी करने लगे। (अजाइबुल कुरआन, पेज 111)

# गुनाह की पहचान

मेरे और आपके सबसे बड़े अहसान फ़रमाने वाले और हम कमीनों के लिए रात रात भर रोकर अल्लाह से दुआ करने वाले आक़ाए दो जहाँ नबीए करीमﷺ ने इरशाद फरमाया है कि,

"वोह काम गुनाह है जो तुम्हारे दिल को मुज़तरिब (बेक़रार) रखे और तुम लोगों को उसे बताना भी पसंद न करो"।

यूँ तो आज हमारे मुआशरे में कई बुराइयाँ फैली हैं और ख़ास तौर से हमारे जवानों में। एक बहुत बुरी आदत जिसको मुश्त ज़नी

कहते हैं, इस्लाम में येह काम नाजाइज़ व गुनाह है और अल्लाह और उसके रसूल की नाराज़गी का सबब है।

## मुश्त ज़नी क्या है:

अपने हाथ के ज़रिए शर्मगाह से खेलकर माद्दा ए मनवीया(वीर्य) को निकालना यानि अपने ऊपर गुस्ल वाजिब कर लेने को मुश्त ज़नी(हस्त मैथून/मास्टरबैशन/हैंड प्रैक्टिस) कहते हैं, ये शैतान के तरफ से बहुत बुरी लत है। जैसे - शराब, गांजा, गुटखा

## शैतान इंसान में कहां कहां होता हैं

अबू बकर मुहम्मद बिन अहमद बिन शैबह "किताबुल कलाइद" में हज़रते इब्ने अब्बास रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि मर्द का शैतान जिस्म में तीन जगह पर रहता है:

(१) उस की आंखों में ,

(२) उस के दिल में ,

(३) और उस के आलए तनासुल (शर्मगाह) में

और औरत का शैतान भी तीन मक़ाम पर रहता है

(१) उस की आंखों में,

(२) उस के दिल में

(३) उस की सुरीन (शर्मगाह) में,

(जिन्नों की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन सुयूती)

## शैतान तुम्हारी रगों में

हदीस:- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद

फरमाया: "जिन औरतों के शौहर मौजूद न हों उनके पास न जाओ क्योंकि शैतान तुम्हारी रगों में खून की तरह दौड़ता है।" (यानी शैतान कही बदकारी न करवा दे) (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द 1, पेज 140)

## मुश्त ज़नी करना कैसा है :-

सय्यदी आ'ला हज़रत फ़तावा रज़विया जिल्द 22 में मुश्त ज़नी के ताल्लुक़ से किये गए एक सवाल के जवाब में फ़रमाते हैं:

यह फे'ल (काम) नापाक हराम व नाजाइज़ है। अल्लाह जल्ल व उला ने इस हाजत के पूरा करने को सिर्फ ज़ौजा (बीवी) व कनीज़े शरई बताई है और कुरआन में साफ इरशाद फरमा दिया है कि तर्जमा :"वो जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं, मगर अपनी बीबियों या शरई बांदियों पर,जो उनके हाथ की मिल्क हैं कि उनपर कोई मलामत (गुनाह) नहीं , तो जो इन दो के सिवा कुछ और (तरीका अपनाए) चाहे, वही हद से बढ़ने वाले हैं। (सूरह मोमिनून, आयत 5-7)

## हस्तमैथुन करने वाले पर अल्लाह त'आला की ला'नत

हदीस में है: "जल्क़ (हस्तमैथुन) लगाने वाले पर अल्लाह त'आला की ला'नत है"। (अल-हदीक़ह अल-नदियह अस्सन्फुस्साबेअ मिनल असनाफ़ तिस्अत, मक्तबा नूरिया रज़विया फैसलाबाद 2 / 491 ) ( अल-असरारुल मरफूअत फी अख़बारुल मौजूअह, हदीस: 1022, दारुल कुतुबुल इल्मिया बैरूत स: 257 )

नोट: मुश्त ज़नी के हवाले से ऊपर बयान करदा अहकाम मर्द व औरत दोनों के लिये हैं।

एक मस्अले में फर्क है जिसे बयान कर देना मुनासिब समझता हूं.. . वह यह कि शौहर अपनी बीवी के जिस्म के किसी भी हिस्से पर उज़्वे तनासुल (लिंग) रगड़ कर इंज़ाल कर सकता है चाहे वह पिस्तान हों या टांगें इस में कोई हर्ज नहीं है। नीज़ बीवी अपने हाथ से शौहर के उज़्वे तनासुल को पकड़ कर इंज़ाल भी करा सकती है मगर शौहर का अपने हाथ से बीवी की शर्मगाह को रगड़ कर इंज़ाल करना मकरूह है क्योंकि वह हाथ की बजाए उज़्वे तनासुल इस्तेमाल कर सकता है जबकि बीवी बाज़ औकात मसलन हैज़ की हालत में हम बिस्तरी नहीं कर सकती इसी लिये शरीअत ने बीवी को हाथ इस्तेमाल करने की इजाज़त दी है।फ़तावा रज़विया शरीफ़ की तहरीर मुकम्मल हुई।

## मुश्त ज़नी की लत कहाँ से आती है:

जूँ जूँ साइंस तरक़्क़ी करती गई नित नई खोजें और ईजादात सामने आती गईं। ये तो सब जानते हैं कि इन ईजादात ने इंसान को बहुत फ़ायदा और सहूलत दी मगर इनके जो ज़हरीले असरात से इंसानियत को जो नुक़सान पहुंचा है उन पर अक्सर लोगों की तवज्जोह नहीं । कैमरा, टीवी और मोबाइल ने जो तबाही बरपा की है वो किससे छुपी है। कैमरे का सबसे ख़तरनाक और ज़हरीला इस्तेमाल बेहयाई फैलाने के लिए कुफ़्फ़ार ने किया। इसके ज़रिए बेहुदा, गंदी और अख़लाक़ का क़त्ल कर देने वाली तस्वीरें और फिल्में बनाईं और उसे टीवी पर दिखाई और शैतान मरदूद ने टीवी की तरफ़ लोगों को ऐसा खीचा कि हर घर में लोगों ने टीवी लगा डाली और अब घर का घर एक साथ

बैठ कर लव सीन, रोमांस सीन देखने लगा। एक मजबूरी तो यहाँ थी कि जो दिखाया जाता वही देखना पड़ता था मगर जब मोबाइल और इंटरनेट आया तो अब ये पाबंदी न रही। अब हर एक के हाथ मे एक एक मोबाइल आ गया कि सब (म'आज़ अल्लाह) जो जी मे आया देखने लगे। जब लव सीन और रोमांस सीन देखते जी धर गया तो अब नफ़्स ने चाहा कि कुछ फ़हश देखा जाए। फिर तो म'आज़ल्लाह जो सर्च किया वो घिनोना मैटर मिल गया। नंगी तस्वीरों और फिल्मों ने एक आग बदन में लगा दी। अभी शादी तो हुई नहीं और ज़िना से बदनामी का डर भी है तो ये नौजवान अपनी शहवत को मिटाने के लिए अपनी जवानी हाथ से बर्बाद करने पर उतारू हो जाता है। और एक वक़्त आता है जब वो इस लत का आदी हो चुका होता है।

ग़ौर किया जाए तो इसकी इब्तेदा यानी शुरुआत नज़र से हुई। आंख ने देखा, दिल में ख़याल पैदा हुआ, नफ़्स ने उकसाया, हाथ पांव ने हरकत की और शर्मगाह ने जुर्म को पूरा कर दिखाया। लिहाज़ा अगर आंख यानी नज़र की हिफाज़त कर ली जाए तो यक़ीनन इस बद फे'ली से बचा जा सकता है। आगे नज़र और उसकी हिफाज़त के ताल्लुक़ से बयान किया जाता है मगर पहले इस हरकत से होने वाले दुनियावी और उख़रवी नुक़सानात को भी ज़ेहन नशीन कर लो।

## मुश्त ज़नी शैतान कराता है

शैतान इंसान के दिल में वसवसा डाल कर गुनाह करना सिखाता है। पहले शैतान इंसान को नंगी वीडियो या गंदी सोच के ज़रिये वैसे हालात पैदा कर देता है कि इंसान अपने कंट्रोल से बाहर होकर ऐसा अमल करने में मजबूर हो जाता है। धीरे-धीरे फिर

इस बुरे अमल की लत पड़ जाती है जिस तरह शैतान ने क़ौमे लूत के लोगों में लवातत जैसी घिनोनी आदत पैदा कर दी थी और उन्हें अल्लाह के अज़ाब का हक़दार बना दिया था।

## वसवसे की हकीकत:

**सवाल** - इब्ने अक़ील फरमाते हैं के अगर सवाल किया जाए के इबलीस का वसवसा कैसा होता है और वह दिल तक कैसे पहुंच जाता है?

**जवाब** - तो इसका जवाब ये है के वसवसा एक पोशीदह शैतानी कलाम है जिसकी तरफ नफूस (नफसानी ख्वाहिशात) और तबाए (तबीयत व फितरत) खुद माईल हो (झुक) जाते हैं और ये जवाब भी दिया गया है के वजदान (जानने की कुव्वत) में दाखिल हो जाता है क्योंकी ये एक लतीफ जिस्म है और वसवसा डालता है और वसवसा ये है कि नफ्स फासिद और रद्दि अफकार की तलक़िन करता है। (जिन्नों की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन सुयूती)

## वसवसा से बचने की दुआ़ :

हज़रत मोआ़विया बिन तलहा रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ (वसवसा के ख़ात्मा) के लिए यह भी एक दुआ़ मांगा करते थे -

तर्जमा - ऐ अल्लाह मेरे दिल को अपने ज़िक्र के ख़यालात से माअ़मूर फरमा दे और मुझ से शयतानी ख़यालात दूर फरमा दे।(जिन्नों की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन सुयूती)

## शैतान वसवसा कहां और कैसे डालता है?

सईद बिन मंसूर और अबू बकर बिन अबी दाऊ़द "ज़िम्मूल वसवसा" में हज़रत अ़रवह बिन रुवैम से रिवायत करते हैं के हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्लाम ने अपने परवरदिगार की बारगाह में अर्ज कि के उन (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) को इन्सानों में शैतान के रहने की जगह दिखाए चुनांचे अल्लाह ताअ़ला ने उन पर ज़ाहिर फरमा दिया तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने देखा कि शैतान का सर सांप की सिर की तरह है जिसने अपना सिर दिल के दहाने पर रखा हुआ है जब इंसान अल्लाह ताअ़ला का ज़िक्र करता है तो ये अपना सिर हटा लेता है और जब बंदा अल्लाह का ज़िक्र छोड़ देता है तो शैतान उसे आज़माता है और वसवसे डालने लगता है याअ़नी उसकी तरफ वापिस आ कर वसवसे डालता है।(जिन्नों की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन सुयूती)

## मुश्त ज़नी से नुक़सान:-

मुश्त ज़नी इस्लाम मे नाजाइज़ और आख़िरत में अज़ाब दिलाने वाला काम तो है ही साथ ही आदमी की दुनियावी ज़िन्दगी पर भी इसका ज़हरीला असर पड़ता है। आदमी की समाजी और घरेलू ज़िन्दगी इससे अछूती नहीं रहती। बदन में तरह तरह की बीमारियां पैदा हो जाती है। इन सब को समझने के पहले उज़वे तनासुल(लिंग) की कार करदगी और बदन से उसके कनेक्शन को समझना पड़ेगा।

# मुस्तज़नी करने का अज़ाब

इमाम इश्क ओ मुहब्बत आला हज़रत फरमातें हैं...."मुस्तजनी करने वाला गुनहगार है, आसी है इसरार के सबब मुर्तकिब ए कबीरा है,फासिक है। हश्र में ऐसों की (यानि मुस्तजनी करने वालों की) हथेलियां गाभिन (प्रेग्नेंट+ हामिला) उठेंगी जिस से मजामा ए आज़म में उनकी रुशवाई होगी अगर तौबा न करे तो। और अल्लाहﷻ माफ़ फरमाता है जिसे चाहे और आज़ब फरमाता है जिसे चाहे। (फतावा रजविया, जिल्द 22, सफा 244)

## आगे किताब 'जवानी-की-बर्बादी' से तहरीर नक़ल की जा रही है

क़ादिर व क़हहार ने अपनी कुदरत से मर्द का आलए तनासुल (ज़कर) एक जौहरे लतीफ़ औरत के ख़ज़ाने तक पहुंचाने के लिए बनाया है। यह एक स्पंज का सा बनाव अपने अन्दर रखता है, जिसके सबब ज़रूरत के वक़्त यह बढ़ सकता है और ज़रूरत पूरी होने के बाद यह घट जाता है। इसकी थोड़ी से तशरीह और देख लो ताकि आइंदा जो बात बतानी है और जिस मुसीबत से आगाह करना है वो आसानी से समझ मे आ जाए।

पूरे जिस्म(आलए तनासुल) के तीन हिस्से अलग अलग लो (1). सर, (2).दरमियानी जिस्म, (3). जड़। जड़ से सर की जड़ तक तमाम जिस्म स्पंज की तरह ख़ाना दार बना होता है जिसके सबब वो आसानी से फैल और सिमट सकता है। इसके ख़ाने पुट्ठों, मोटी रगों और बारीक बारीक रगों से धरे हुए हैं। येह रगें और पुट्ठे शाख़ दर शाख़ होकर तमाम जिस्म के खानों में फिरते हैं। जांबजा उनमें गोश्त के थोड़े थोड़े रेशे भी हैं। जिस्म के ऊपर की तरफ़ दो ख़ास झिल्लियाँ हैं जो ऊपर नीचे वाकेअ, इस झिल्ली में पुट्ठों के बारीक बारीक तार इस कसरत से फैले हैं कि उनका शुमार दुश्वार है। सीवन की तरफ़ एक बारीक पुट्ठा है जो ज़िन्दगी की रूह को यहाँ तक लाता है इसमें भी पुट्ठों के बारीक बारीक तार मौजूद हैं।

सर:- यह भी स्पंजी सूरत का बना हुआ है इसमें बहुत बारीक बारीक खून की रगें हैं और पुट्ठों के निहायत नाजुक बारीक बारीक तार जिनमें अहसास की कुव्वत सबसे ज़्यादा होती है। येह तमाम पुट्ठे कमर और दिमाग से मिले हुए हैं। गोया उनको बिजली

की तारों की तरह समझो। उधर दिमाग़ में ख़याल पैदा हुआ इधर इधर आसाब ने अपना काम शुरू किया। दिमाग़ से ख़ाहिश और इरादा का ज़हूर फ़ौरन इधर महसूस हुआ और कमर से इन पुट्ठों के लगाव ने जिस्म को तना रखा।

यह सब इसलिए बताया गया कि सिर्फ इतनी बात समझ मे आ जाए की पुट्ठों और रंगों पर कोई ग़ैर मामूली दबाव पड़ेगा या ये तार किसी तरह ख़राब हो जाएं तो दिमाग़ तक इसका असर पहुँचेगा। कमर भी इसकी तकलीफ़ को महसूस करेगी। येह बात तो तुम्हें मालूम ही है कि रगड़ने से रतूबत (गीलापन) कम होती है और खुश्की (सूखापन) आती है। येह खुश्की खुजली को और बढ़ाती है। खुजलाने और बार बार रगड़ने से खाल दुख जाती है और खून फ़ौरन उस इस तरफ दौड़ आता है(जहाँ चाहे बदन में खुजा कर देख लो) और अगर ज़्यादा सहलाओगे, खुजाओगे वहाँ कुछ वरम (सूजन) भी हो जाता है।

अब सुनो! औरत के जिस्म में कुदरत ने ऐसी रतूबतें पैदा फ़रमाई हैं जिनके सबब अगरचे मर्द का जिस्म रगड़ ज़रूर खाता है लेकिन न कोई ख़राश पैदा होती है न कोई दुखन। खून का इस तरह खून का दौड़ कर आना हिजान को बढ़ाता है। लेकिन अन्दर की रगों और पुट्ठों पर कोई ऐसा ना गवार बार नहीं पड़ता। जिससे अन्दर किसी किस्म की सूजन पैदा हो और तकलीफ़ पहुंचे। इसके बिल मुक़ाबिक दुनियाँ की तमाम लीसदार रतूबतों में कोई रतूबत तेल हो या साबुन वेसलीन हो या घी हरगिज़ वो कैफ़ियत नहीं पैदा कर सकती जो इस किस्म के रगड़ की तकलीफ़ से बचाए। और औरत के मख़सूस जिस्म के सिवा इंसानी जिस्म का कोई हिस्सा भी ऐसा नरम नहीं जो अपनी ख़राश से मर्द के जिस्म को महफ़ूज़ रख सके।।

हाथ और हाथ में भी हथेलियाँ और उंगलियों की खाल वैसे ही सख़्त होती है। फिर दुनियाँ के काम काज में मसरूफ़ रहने वाले मर्दों की खाल और ज़्यादा सख़्त। हाथ इस जिस्मे नाजुक से छेड़ छाड़ करके उस नाजुक झिल्ली को सख़्त दुख पहुँचाता है, वो बारीक बारीक रगें और पुट्ठे भी इस सख़्ती को हरगिज़ बर्दाश्त नहीं  कर सकते ख़्वाह कैसी ही रतुबतें और चिकनाहट क्यूँ न इस्तेमाल में लाई जाएँ। रगें और पुट्ठे इस ख़राश से इस क़दर जल्द असर लेते हैं कि वरम पैदा होता है और एक बार अपने हाथों इस बे बहा दौलत को बरबाद करने का नतीजा येह होता है कि हिस्स बढ़ कर हाथ बार बार इस काम की तरफ़ बढ़ता है। वही एक खुजली की सी कैफ़ियत बार बार तबियत को उधारती है। और दो तीन बार (म'आज़ अल्लाह) ऐसा किया गया तो वही वरम मुस्तकिल सूरत इख़्तियार करता है। नरम और नाजुक रगें दब कर रगड़ खा कर सुस्त हो जाती है और पुट्ठे इस क़दर ज़ी हिस हो जाते हैं कि रफ़्ता रफ़्ता मामूली सी रगड़ से भी हिजान होकर वो अनमोल माद्दा यूँही पानी की तरह बह जाता है। रगों की सुस्ती, पुट्ठों की ख़राबी जिस्म की हालत को बिगाड़ती है। स्पंजी किस्म के अजसाम के दबने से सबसे पहले जो असर होता है वो जड़ का कमज़ोर और लाग़र हो जाना है। इसके अलावा जिस्म के दरमियानी हिस्से में भी जहाँ जहाँ रगें और पुट्ठे ज़्यादा दब जाते हैं वोह हमवार न रहेगी और जिस्म टेढ़ा हो जाएगा, रगें जो इन स्पंजी खानों में हैं उनके दबने से खून और रूहे हैवानी की आमद कम होगी, रगें फैल नहीं  सकेंगी लिहाज़ा स्पंजी जिस्म भी न फैल सकेगा, सख़्ती जाती रहेगी, जिस्म ढीला और बेहद लाग़र हो जाएगा। इसके बाद ख़्वाह कितनी भी कोशिश क्यूँ न की जाए जिस्म की तरक़्क़ी हमेशा के लिए रुक जाती है और अपने हाथों की इस करतूत की वजह से येह जिस्म औरत के क़ाबिल रहता ही

नहीं । अगर कोई बेज़बान अस्मत व इफ्फ़त की देवी ऐसे शख़्श के सुपुर्द कर दी गई तो उमर भर अपनी किस्मत को रोएगी और येह बद नसीब हक़ीक़त में उसको मुँह दिखाने के क़ाबिल न होगा। इसलिए कि पहले तो इससे मिल ही नहीं सकता और अगर किसी तरीके से मिल भी जाए तो माद्दा से औलाद पैदा करने के अजज़ा मर चुके हैं। अब इसे औलाद से हमेशा के लिए मायूस होना चाहिए। अगर इस ख़बीस आदत को और जारी रखा गया तो खाल का रंग सियाह(काला) हो जाता है और हिस्स इस क़दर बढ़ जाता है कि मामूली कलपदार कपड़े से भी इंसानी जौहर(वीर्य) बर्बाद हो जाता है। पुट्ठों का हिस्स इस क़दर ख़राब हो जाता है कि (दिमाग़ से कनेक्शन होने की वजह से) इधर दिमाग़ में ख़याल आया उधर माद्दा(वीर्य) बर्बाद हुआ।

यह वो नाजुक हालत है कि इस जिस्मे ख़ास (लिंग) की इन खराबियों की वजह से इंसान के पूरे जिस्म की मशीन ख़राब हो जाती है। अभी तुमने देखा कि इन पुट्ठों का कनेक्शन दिमाग से है। इनकी ख़राबी से दिमाग़ खराब हुआ, तमाम जिस्म की ताक़तें दिमाग़ के कंट्रोल में हैं, इसकी ख़राबी से तमाम कुव्वतें ख़राब, नज़र कमज़ोर होगी, कानों में शाएँ शाएँ की आवाजें आएंगी, मिज़ाज(मूड) में चिड़चिड़ापन होगा, ख़यालात में परेशानी बढ़ती बढ़ती दिमाग़ को बिल्कुल निकम्मा बना देगी और अपने हाथों इस जौहर को बर्बाद करने का नतीजा जुनून(पागलपन) है।

(साहिबे तस्नीफ कहते हैं) येह जौहरे लतीफ़ (यानी वीर्य) खून से बनता है और खून भी वो जी तमाम बदन को ग़िज़ा पहुंचाने के बाद पहुँचा। बस अगर इस माद्दा(वीर्य) को इस कसरत के साथ बरबाद किया गया कि खून को बदन को ग़िज़ा पहुँचाने का का भी मौक़ा न मिला, दिल में ठहर ही न सका कि इस तरह निकाल

दिया गया, तो दिल कमज़ोर होगा, तेज़ धड़केगा, ज़रा सा पत्ता खड़का और इख़्तेलाज(भ्रम) शुरू हुआ। दिल पर तमाम बदन की मशीन का दारोमदार है। जिस्म को खून न पहुँचा तो रोज़ बरोज़ कमज़ोर और लाग़र होता गया। बल्कि अगर येह कसरत इस हद को पहुँची कि खून बनने भी न पाया था कि निकलने की नौबत आई तो जिगर का फ़े'ल(काम) ख़राब हुआ, गुर्दों की गरमी दूर हुई, मेदे(पेट) पर असर पड़ा, वो ख़राब हुआ, धूख कम हुई, ज़ौफ(कमज़ोरी) ने ऐसा आ दबाया कि चन्द क़दम चलना मुश्किल, न दिन का चैन रहा न रात का आराम, रात को सोये आराम के लिए। परेशान खयालों ने कभी कोई तस्वीर पेश की और कभी वैसे ही कि बयाँ तक नहीं , क्या हुआ वही कर दिखाया जो अपने हाथों से किया जा रहा, सुबह उठे तो बदन सुस्त है, जोड़ जोड़ में दर्द है, आंखें चिपकी हुई हैं, इसलिये की इनके अज़लात भी ख़ास जिस्म के अज़लात के साथ साथ कमज़ोर होते गए। सोना आराम के लिए न था, जिस्म महसूस कर रहा है कि उसे सख़्त तकलीफ़ है। येह सब क्यूँ हुआ? सिर्फ़ इसलिए कि अपने हाथों अपना खून बहाया गया, येह हमारा कहना जिस तबीब से चाहो पूछ लो, जिस डॉक्टर से चाहो मशवरा ले लो, वो भी यही बताएगा जो हमने कहा।

एक मशहूर डॉक्टर अपनी तालीफ़ में लिखता है कि जिसे 'ज़र्द' व 'दुबला', 'कमज़ोर' वहशियाना शक्लो सूरत का पाओ, जिसकी आँखों मे गढ़े पड़े हों, पुतलियाँ फैल गई हों, शणमला हो, तन्हाई को पसंद करता हो उसकी निस्बत यक़ीन कर लो कि उसने अपने हाथों अपना खून बहाया है।

एक ज़बरदस्त तजर्बेकार तबीब, आला दर्जे के मुआलिज अपनी तहक़ीक़ इस तरह शाए(पब्लिश) फ़रमाते हैं कि "एक हज़ार तपेदिक़ के मरीज़ों की बीमारी के असबाब(वजह) पर ग़ौर करने से साबित हुआ कि उनमें 186 औरतों के साथ कसरत के साथ(ज़्यादा) मिलने की वजह से इस बीमारी में मुब्तला हुए। 414 सिर्फ़ अपने हाथों अपनी कुव्वत के बरबाद करने के सबब, बाकी दूसरे उमूर बाज़ असबाब से। 124 पागलों का इम्तेहान करने से मालूम हुआ कि उनमें से 24 सिर्फ़ अपने हाथों अपने जिस्मे ख़ास के पुट्ठों को ख़राब करने के सबब पागल हुए और बाकी 10 0 दूसरे हज़ारों असबाब के सबब।

येह आपने इससे पहले पढ़ लिया कि माद्दा ए मख़सूस (वीर्य) पतला हो जाता है और थोड़ी थोड़ी रतूबत अक्सर निकलती और बहती रहती है, तो नाली में इस रतूबत में रहने और सड़ने की वजह से बसा औक़ात(कई बार) ज़ख्म पड़ जाते हैं, वो ज़ख्म बढ़ते बढ़ते बड़ा कुरहा डालते हैं। पहले पहले पेशाब में मामूली जलन होती फिर मवाद आना शुरू होता और जलन बढ़ती है यहाँ तक कि पुराना सुज़ाक होकर इंसानी ज़िन्दगी को ऐसा तल्ख़ बना देता है कि उस वक़्त आदमी को मौत प्यारी मालूम होती है।

इसी तरह ज़ाए करते करते माद्दा रक़ीक़(पतला) होने के सबब खुद बखुद बिला किसी ख़याल के पेशाब के बाद या पहले या पेशाब में मिला हुआ निकल जाएगा। इस मर्ज़(बीमारी) का नाम जिरयान है जो तमाम खराबियों और बहुत से शदीद तरीन उमूर की जान (यानी जड़) है।

अगरचे इस ग़लत कारी के सबब जिस्म में ऐसी खराबियाँ पैदा हो जाती हैं कि असल हालात पर आना और फिर वही कैफ़ियत पाना

दुश्वार ही नहीं यक़ीनन ना मुमकिन है। इसलिए हम कहते हैं कि खुदारा बचो, होशियार रहो, जवानी के जुनून में अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी न मारना, वरना उमर भर पछताओगे, उस वक़्त हमारा कहना याद आएगा, सर पकड़ कर रोओगे, अपनी जान खोओगे। मगर फिर पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत।

आज ही संभल जाओ, इस बला के क़रीब भी न फटको, होशियार होशियार अपने आप को संधालो, ज़रा सब्र करो। हम तुम्हारे वालिदैन से कहते हैं कि जल्द तुम्हारा अक़्दो निकाह करें और अगर वो देर करें तो तुम्हें इख़्तियार है कि तुम खुद बोल उठो या खुद किसी मुनासिब जगह निकाह कर लो। लोग इसको बेहयाई कहें मगर हम न कहेंगे, इस नापाक आदत से तो बचोगे, जान से तो हाथ न धोओगे।

यहाँ जवानी की बर्बादी किताब की तहरीर मुकम्मल होती है।

## मेडिकल साइंस क्या कहती है :

आज की जदीद मेडिकल साइंस इस बात का एतराफ़ करती है कसरत से मुश्त ज़नी करना यक़ीनन नुक़सान देह है। लिहाज़ा जिस्म में इससे होने वाले चंद नुक़सानात को दर्ज किया जाता है :-

### 1. सुस्ती और कमज़ोरी

ज़्यादा मुश्त ज़नी की वजह से जिस्म से एनजएँ बहुत ज़्यादा मिक़दार में निकलती है और जिसके बाइस जिस्म में एनजएँ की कमी होने लगती है और नतीजतन आदमी थकावट के साथ साथ कमज़ोरी और सुस्ती भी महसूस करने लगता है ।

### 2. नज़र कमज़ोर होना

विजुअल सेंसरी नर्व्स में सी-जी-एम-पी , नाइट्रिक ऑक्साइड और एसटिलकोलीन की कमी की वजह से धुंधली नज़र या काले धब्बे, जो आपकी आंखों की नज़र में बादल का काम करते है , का वजह बनते है और इन सब केमिकल्स में कमी की वजह होती है ज़्यादा मुश्त ज़नी करना।

### 3. पीठ दर्द या बेचैनी

कसरत के साथ मुश्त ज़नी करने पर ऑक्सीटोसिन , डी-एच-ई-ए , टेस्टोस्टेरोन और डी-एच-टी का बनना कम हो जाता है और जिसके बाइस सूजन हार्मोन प्रोस्टाग्लैंडीन ई-2 के रिलीज़ में मददगार बनता है और नतीजतन पीठ दर्द या बेचैनी की शिकायत होती है।

## 4. नींद न आना

मुश्त ज़नी करने से जिस्म में एंडोणफन हॉर्मोन के लेवल में बहुत ज़्यादा बढ़ोतरी होती है और एंडोणफन हॉर्मोन अच्छी और गहरी नींद के लिए बहुत ज़रुरी है। मेलाटोनिन एक नयूरो केमिकल है जो नींद लाने में मदद करती है मगर जो मर्द ज़्यादा मुश्त ज़नी में मुलव्विस होते हैं उसमें मेलाटोनिन में कमी आ जाती है और जिसके बाइस वो नींद न आने की बीमारी की ओर जाता है ।

## 5. बालों का झड़ना

मेडिकल साइंस के माहिरीन की रिसर्च के मुताबिक़ ज़्यादा वीर्य निकलने के बाद जिस्म प्रोस्टेट और टेस्टिस में टेस्टोस्टेरोन को डी-एच-टी में बदलता है और जिसकी वजह से बाल या तो पतले हो सकते है और वो ज़्यादती के साथ झड़ने लगते है । अमेरिकन हेयर लॉस एसोसिएशन के मुताबिक़ डी-एच-टी बालों के रोम पर हमला करता है, बालों की जड़ों में ग़िज़ा की सप्लाई में रुकावट बनता है, खोपड़ी को चिकना बनाता है और सबसे ज़रूरी कोणटसोल हॉर्मोन के बनने को उकसाता है जो प्रोलाक्टिन के लेवल को बढाने के साथ साथ डी-एच-ई-ए, एच-जी-एच और टेस्टोस्टेरोन के लेवल को कम करता हैद्य नतीजतन न्यूरो केमिकल्स में अचानक बदलाव बालों के झड़ने की वजह बनता है ।

## 6. पायरोनी की बीमारी हो जाना

मुश्त ज़नी करने से लिंग के पुट्ठे भी टूट जाते हैं। जिससे लिंग टेढ़ा हो जाता है। क्योंकि मुश्त ज़नी करते वाला अपने लिंग को बहुत ही मज़बूती से जकड़कर दबाने या मोड़ने लगता है, वो

सोचता है की ऐसा करने से वीर्य बाहर नहीं निकलेगा। ऐसा करने से कई बार पायरोनी नाम की बीमारी भी हो सकती है।

## 7. स्पर्म कम हो जाना

मुश्त ज़नी करने से शुक्राणुओ (बच्चा पैदा करने वाले जरासीम) की तादाद कम हो सकती है। वीर्य में लाखों की तादाद में शुक्राणु होते हैं और इनकी कमी की वजह से आदमी बाप नहीं बन पाता।

# शर्मगाह की हिफ़ाज़त

## नमाज़ से शर्मगाह की हिफाज़त

कुरआन में अल्लाह त'आला इरशाद फरमाता है: बेशक नमाज़ मना करती है बेहयाई और बुरी बात से।(सूरह अंकबूत, आयत न. 45)

## नमाज़ और सब्र से मदद

अल्लाह कुरआन में फ़रमाता है : ऐ इमान वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो। (सूरह बकरा, आयत न. 153)

नसीहत : ऐ नादान मुसलमान तू अल्लाह से मदद मांगता है जबकि अल्लाह फ़रमाता है कि सब्र और नमाज से मदद चाह यानी अल्लाह मदद तब करेगा जब तू ख़्वाहिशात पर सब्र करने वाला बन जा और नमाज़ का पाबंद हो जा वरना कितने ऐसे नाफरमान है जिसे अल्लाह मदद के बजाए अज़ाब दे रहा है।

## ज़िना की इब्तिदा आँख से

हज़रते यहया अलैहिस्सलाम से लोगों ने पूछा कि ज़िना की इब्तिदा कहाँ से होती है? उन्होंने फ़रमाया "आँख से"। (कीमिया-ए-सआदत पेज 498)

## औरत को शहवत से देखने का अज़ाब

हदीस:- हुज़ूर नबीए करीम ﷺ ने फरमाया: 'अजनबिया खूबसूरत औरत को शहवत से देखने वाले की आँख में क़यामत के दिन पिघला शीशा डाला जाएगा" (हिदाया जिल्द 4, 442)

## दोनों पर अल्लाह की लानत

हदीस:- रसूलुल्लाहﷺ ने फ़रमाया: "जो मर्द ग़ैर औरत को देखे और जो औरत अपने को ग़ैर मर्दों को दिखाए, दोनों पर अल्लाह की लानत।" (मिशकात शरीफ पेज 270 )

## नज़र फेर लिया करो

हदीस:- हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह का बयान है कि मैंने रसूलुल्लाहﷺ से अचानक नज़र पड़ जाने के मुतअल्लिक पूछा तो फरमाया: "अपनी नज़र फेर लिया करो"। (अबू दाऊद पेज 292)

## दूसरी नज़र पर गिरफ़्त है

हदीस:- हज़रते अली रदीअल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाहﷺ से अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! बा'ज़ औकात ग़ैर औरत पर अचानक नज़र पड़ जाती है। आक़ाﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "ऐ अली! पहली नज़र जो अचानक पड़ जाए, उस पर गिरफ्त नहीं लेकिन दूसरी नज़र पर गिरफ़्त है"। (अबु दाऊद पेज 292)

## ईमान की हलावत

हदीस:- रसूलुल्लाहﷺ ने फ़रमाया: "निगाह इबलीस के तीरों में से एक तीर है जिसको ज़हर के पानी से बुझाया गया है। पस जो कोई खुदावन्द करीम के डर से अपनी निगाह को बचाएगा उसको ऐसा ईमान नसीब होगा जिसकी हलावत(मिठास) वह अपने दिल में महसूस करेगा।" (कीमिया-ए-सआदत पेज 197)

## शहवत को रियाज़त से ख़त्म करे

हदीसः- रसूलुल्लाहﷺ इरशाद फरमाते हैं: "आँख भी शर्मगाह की तरह ज़िना करती है और आँख का ज़िना नज़र है। वह शख्स जो नज़र को बचाने की कुदरत नहीं रखता, उस पर वाजिब है कि शहवत को रियाज़त से ख़त्म करे। इसकी तदबीर यह है कि रोज़ा रखे, वरना निकाह करे। (कीमिया-ए-सआदत पेज 497)

## रोज़े के ज़रिए शर्मगाह की हिफाज़त

हदीसः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: "ऐ जवानो! तुम में से जो कोई निकाह की इस्तिताअत रखता है वह ज़रूर निकाह करे कि यह अजनबी औरत की तरफ़ नज़र करने से निगाह को रोकने वाला है और शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने वाला है और जिसमें निकाह की ताकत न हो वह रोज़ा रखे क्योंकि यह शहवत (जोश) को कम करता है। " (बुखारी शरीफ जिल्द 2, पेज 758)

## नफ्स से जिहाद करके शर्मगाह की हिफाज़त

हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अपने शिकमों को भूका रखो, लालच को छोड़ दो, जिस्मों की ज़ेबाईश न करो, ख्वाहिशों को कम करो, दिल व जिगर को प्यासा रखो, दुनिया से किनारा कशी करो ताकि तुम्हारे दिल अल्लाह का मुशाहिदा कर सकें। (कशफुल महजूब, 441)

## ख़ौफ़े खुदा में शर्मगाह की हिफाज़त :

अल्लाह फ़रमाता है: **बेहयाइयों के पास न जाओ जो उनमें खुली हैं और जो छुपी है** (सुरह: अनाम , आयत न.151) (मोमिन वो

होता है जो अल्लाह के हुक्म को मानता है, और जो जानकर भी नही मानता वो फ़ासिक़ और जो इनकार कर दे वो काफ़िर, अगर तुम ईमान रखते हो  तो अल्लाह के खौफ़ से अपने हाथ को इस बेहयाई से दूर रखो वरना नाफरमानों में शुमार होकर अज़ाब के हकदार बन जाओगे। ( अल्लाह की पनाह)

## इश्के मुस्तफ़ा में शर्मगाह की हिफाज़त

हज़रते अली रदीअल्लाहु अन्हु अपनी शर्मगाह को न देखते और फरमाते कि जिन आँखो से हुजूर का दीदार किया है उन आंखों से मैं अपनी शर्मगाह कैसे देखूँ।

(इबरत :  जरा सोचो जिन हाथों से तुम अल्लाह से दुआ मांगते हो, जिन हाथों से कुरआन को छूते हो उन हाथों से अपनी शर्मगाह से खेल कर बेहयाई करते हो और अल्लाह को नाराज करते हो?)

## सच्ची तौबा और शर्मगाह की हिफाज़त :

बन्दा जब गुनाह करता है तो अल्लाह से दूर और शैतान के करीब चला जाता है फिर बन्दा सच्ची तौबा करता है तो शैतान से दूर और अल्लाह के करीब हो जाता है जैसा कि कुरआन में अल्लाह का फरमान है : बेशक अल्लाह  पाक रहने वालों और तौबा करने वालो को अपना दोस्त रखता है। (सूरह बक़रह, आयत न. 222)। (जब अल्लाह किसी को अपना दोस्त बना लेता है तो शैतान उससे मुस्तज़नी, बदकारी और लवातत जैसे  गुनाहों से भी दूर कर देता है और शैतान उससे फिर येह गुनाह नहीं  करा सकता।)

## निकाह करो या रोज़ा रखो

बुखारी व मुस्लिम व अबू दाऊद व तिर्मिज़ी व नसाई अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से रावी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ जवानों तुम में जो कोई निकाह की इस्तिताअत रखता है वह निकाह करे कि यह अजनबी औरत की तरफ नज़र करने से निगाह को रोकने वाला है और शर्मगाह की हिफाजत करने वाला है और जिस में निकाह की इस्तिताअत नहीं वह रोजा रखे कि रोज़ा क़ातए शहवत (शहवत को तोड़ने वाला) है। (बहारे शरीयत, हिस्सा 7)

## निकाह करना वाज़िब कब है?

बहारे शरीयत हिस्सा 7 में दुर्रे मुख़्तार के हवाले से मसला बयान किया गया कि शहवत का ग़लबा है कि निकाह न करे तो मआज़ल्लाह अन्देशा-ए-ज़िना है और महर व नफ़क़ा की कुदरत रखता हो तो निकाह वाजिब है यूँही जब कि अजनबी औरत की तरफ निगाह उठने से रोक नहीं सकता या म'आज़ल्लाह हाथ से काम लेना (मुस्त ज़नी करना) पड़ेगा तो निकाह वाजिब है।

## निकाह फर्ज़ कब है?

उसी में है कि यकीन हो कि निकाह न करने में ज़िना वाक़ए हो जायेगा तो फर्ज़ है कि निकाह करे।

## निकाह सुन्नत भी है :

सुन्नत का मतलब है हुजूर सल्लल्लाहो अलैहिस्सलम के फरमान को मानकर उसपर अमल करना। बुखारी व मुस्लिम व अबू

दाऊद व नसाई व इब्ने माजा हज़रते अबू हुरैरा रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से रावी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया औरत से निकाह चार बातों की वजह से किया जाता है (निकाह में उनका लिहाज़ होता है) 1. माल व 2. हसब 3.व जमाल व 4 दीन और तू दीन वाली को तरजीह दे। (यानी दुनियादार औरत को पसंद न कर) (बहारे शरीयत, हिस्सा 7)

उसी में है: मसला:- ए'तिदाल की हालत में यानी न शहवत का बहुत ज़्यादा ग़लबा हो न इन्नीन (नामर्द) हो और महर व नफ्क़ा (रोटी, कपड़ा, और मकान) पर कुदरत भी हो तो निकाह सुन्नते मुअक्क़दा है कि निकाह न करने पर अड़ा रहना गुनाह है और अगर हराम से बचा या इत्तिबाए सुन्नत व तामीले हुक्म या औलाद हासिल होना मकसूद है तो सवाब भी पायेगा और अगर महज़ लज्ज़त या क़जाए शहवत (सिर्फ जिस्मानी ख़्वाहिशात पूरा करना) मन्जूर हो तो सवाब नहीं।

## कैसी औरत से निकाह करे

हदीस :- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जो मर्द किसी औरत से उसकी इज़्ज़त के सबब निकाह करे, अल्लाह तआला उसकी ज़िल्लत में ज़्यादती करेगा और जो किसी औरत से उसके माल (अमीरी) के सबब निकाह करेगा तो अल्लाह तआला उसकी मोहताजी बढ़ायेगा और जो उसके हसब के सबब निकाह करेगा तो उसके कमीनेपन में ज़्यादती फरमायेगा और जो इसलिए निकाह करे कि इधर-उधर निगाह न उठे और पाक दामनी हासिल हो या सिला रहमी करे तो अल्लाह तआला उस मर्द के लिए उस औरत में बरकत देगा और

औरत के लिए मर्द में। " (सुन्नी बहिश्ती जेवर 228)

## मोमिना औरत से निकाह के फायदा

हदीस : अबू य'अला जाबिर रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से रावी कि फरमाते हैं जब तुम में कोई निकाह करता है तो शैतान कहता है हाए! अफसोस इब्ने आदम ने मुझ से अपना दो तिहाई दीन बचा लिया। (बहारे शरीयत, हिस्सा 7)

## तक़्वे के बाद नेक औरत

इब्ने माजा में अबू उमामा  रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से रावी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते थे तकवे के बाद मोमिन के लिए नेक बीवी से बेहतर कोई चीज़ नहीं अगर उसे हुक्म करता है तो वह इताअत करती है और उसे देखे तो खुश कर दे और उस पर क़सम खा बैठे तो क़सम सच्ची कर दे और कहल को चला जाये तो अपने नफ़्स और शौहर के माल में भलाई करे (खियानत व बर्बाद न करे) (बहारे शरीयत, हिस्सा 7)

## मुजर्रद (ग़ैर शादी शुदा) रहने के आदाब :

मुजर्रद रहने यानी गैर शादी शुदा रहने के आदाब में शर्त यह है कि आंखों को ना शायिस्ता बातों से महफूज़ रखे और न देखने के लायक चीज़ों को न देखे और नाजायज़ आवाज़ों को न सुने और ना मुनासिब बातों को न सोचे। शहवत की आग को फ़ाक़ा और भूक से बुझाए दिल को दुनिया और हवादिस की मशगूलियत से महफूज़ रखे और नफ़्सानी ख़्वाहिश का नाम इल्म व इलहाम न रखे और शैतान के फरेबों की तामील न करे ताकि तरीक़त की

राह में मक़बूल हो। (कशफुल महजूब हिन्दी, 487)

## मुश्त ज़नी से कैसे बचें:

उम्मीद करता हूँ कि ऊपर की तहरीर को पढ़ कर इस फेल के दुनियावी और उख़रवी नुकसान से वाक़फ़ियत हुई होगी। अब ज़रूरी समझते हैं कि मुश्त ज़नी से बचने के लिए क्या जाए इस पर कुछ बात हो:-

(1). सबसे पहले अल्लाह की बारगाह में इस फ़े'ले बद से सच्ची पक्की तौबा करें, और पक्का अहद व इरादा करें की आइंदा इस गुनाह की तरफ़ न जाऊंगा। किसी सच्चे और शरीअत के पाबन्द पीर से मुरीद हो जाएं। इल्म हासिल करें, औलमा और नेकों की संगत में बैठें। बुरे दोस्तों की संगत से सख़्त परहेज़ करें। नमाज़ की पाबन्दी करें(क्यूंकि नमाज़ बुरी और बेहयाई की बातों से रोकती है), हो सके तो हर हफ़्ता रोज़ा रखें कि रोज़ा शहवत को तोड़ता है।

(2). अपनी ज़ाहिरी और बातिनी (यानी दिल की) सफ़ाई पर ध्यान दें। रोजाना सुन्नत के मुताबिक़ गुस्ल करें, साफ सुथरे कपड़े पहनें, इत्र लगाएं, हर हफ़्ता नाफ़ के नीचे और बगल के बाल साफ करें और हर हफ़्ते नाखून काटें। ये तो ज़ाहिरी सफाई की बात थी दिल को पाक करने का तरीक़ा येह है कि कसरत से तौबा व इस्तग़फ़ार करें, अल्लाह की बारगाह में अपने गुनाहों को याद करके आँसु बहाएं, कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करें, रोजाना दरूद शरीफ़ एक खास तादाद में 100, 200 या 1000 जितनी तौफ़ीक़ हो पाबंदी से पढ़ें , कुरान शरीफ़ को सही पढ़ना सीखें और रोज़ाना तिलावत करें। ला हौल शरीफ़ को हर वक़्त उठते बैठते पढ़ते रहें।

(3). अपने घर में दीनी माहौल बनाएं, घर से टीवी को निकल फेंकिए, दीनी किताबें लाइये, मोबाइल फ़ोन को बिला ज़रुरत टाइम पास के लिए इस्तेमाल न करें, सोशल मीडिया का इस्तेमाल कम करें, यूट्यूब वग़ैरा में जितने भी फिल्मों, गानों, कॉमेडी के चैनल हैं सब को हटा दीजिये, व्हाट्सएप्प और टेलीग्राम पर एक भी फ़ालतू और गुनाह की तरफ ले जाना वाला ग्रुप न रखें, ट्विटर, इंस्टाग्राम, फेसबुक सब को हटा दीजिये और मैं तो कहता हूँ कि आप स्मार्टफोन ही मत रखिये, सादा कीपैड वाला फ़ोन रखिए जब तक कि आप इस गुनाह से पूरी तरह बच नहीं जाते।

(4). औलियाए किराम और बुजुर्गाने दीन की हिकायत पढ़ा करें, जिससे गुनाहों से बचने का जज़्बा पैदा होगा और अल्लाह के प्यारे बंदों के ज़िक्र की बरकत से अल्लाह आपका दिल भी रौशन फ़रमाएगा, अल्लाह वालों के मज़ार पर हाज़री दें और उनके वसीले से अल्लाह की बारगाह में तौबा करें, इस्लामी तारीख़ यानी इतिहास पढ़ें।

(5).खाने पीने पर तवज्जोह दें, खाना कम खाएं हदीस में है कि सरकार ने भूख के तीन हिस्से करने का हुक्म दिया एक हिस्सा खाने के लिए, दूसरा हिस्सा पानी के लिए और तीसरा हवा के किए, गरम चीज़ों का इस्तेमाल बिल्कुल कम कर दें, ज़्यादा मसालेदार, तली हुई और चटपटी चीज़ें न खाएं, सादा खाना खाएं।

(6). कई बार कोई हसद करने वाला शख़्स जादु के ज़रिए भी इस तरह बला में किसी को मुब्तला कर देता है, जिसमे उस शख़्स के पीछे जिन्नात लगा दिए जाते हैं जो बार बार इसे इस

ख़बीस काम को करने के लिए उकसाते हैं, ये हासिदीन ऐसा इस लिए करते हैं ताकि ये शख़्स पूरी तरह नामर्द हो जाए और बच्चा पैदा करने के क़ाबिल न रहे। अगर कोई शख़्स इस गुनाह से बचने की पूरी कोशिश करने के बावजूद भी इस गुनाह की तरफ़ जाता है और हर वक़्त इन्ही सब ख़यालात में उलझा रहता है और अपने रोज़मर्रा के कामों में बहुत डिस्टर्ब होता है तो मुमकिन है कि इसमें किसी दुश्मन का हाथ हो। ऐसे में किसी अच्छे आमिल को दिखा कर इलाज कराएं।

## (7).जब शैतान मुश्तज़नी करने को उकसाए:

मुस्तज़नी करने का ख़्याल अगर दिल पैदा हो तो याद रखो अल्लाह फरमाता है:

१. **"छोड़दो खुला और छुपा गुनाह करना"** (सूरह अन'आम, आयत न. 120)

२. **बेहयाइयों के पास न जाओ जो उनमें खुली हैं और जो छुपी है** (सुरह अन'आम , आयत न.151 )

३. **अल्लाह व रसूल ﷺ का हुक्म मानो अगर ईमान रखते हो।** (कंजुल ईमान, सुरह अनफ़ाल, आयत न. 1)

हदीस में है:

हज़रत अबू कतादह रज़ियल्लाहु अन्हु हदीस रिवायत करते हैं जिसका एक जुज़ येह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जब तुम में से कोई बैतुल खुला जाए तो शर्मगाह को दाहिने हाथ से न छुए। (आदाबे सुन्नत, 341)

## 4 अल्लाह का ज़िक्र

अल्लाह की पनाह मांगो शैतान और शैतानी कामों से, अल्लाह का ज़िक्र करो कि अल्लाह के ज़िक्र से शैतान भागता है। वजू करो कि शैतान आग है और आग पानी से बुझाइ जाती है।

एक और बात हम बता देते हैं जो फ़ायदे से ख़ाली न होगी कि जब भी जोश पैदा हो तो आँखें बंद करके पूरी ताकत से साँस अंदर लो और जितनी देर तक रोक सकते हो साँस रोको फिर आहिस्ता आहिस्ता साँस छोड़ो, इसी को कुछ बार दोहराओ, तुम देखोगे की जोश जाता रहेगा।

(8). खुदा न ख़ास्ता अगर कोई इस बद काम से अपनी जवानी बर्बाद कर चुका हो तो किसी मुस्लिम हकीम के पास अपना मसला बताए और मुकम्मल इलाज कराएं।

## वो भी तो जवान थे:

अब आख़िर में कुछ नौजवानों की हिकायतें नक़ल की जा रही हैं, इन्हें बग़ौर पढ़ो और इबरत हासिल करो।

### हिकायत (1). अपनी एक आँख फोड़ डाली:

बयान किया जाता है कि हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने एक मर्तबा अपनी क़ौम की क़हत साली दूर करने के लिए अल्लाह से बारिश तलब की तो हुक्म हुआ कि अपनी क़ौम के अंदर जितने ज़ियांकार और गुनाहगार हैं वो अलग कर दिए जाएं। लिहाज़ा इस क़ौम के लोग अलग कर दिए गए सिवाए एक शख्स के जिसकी दाहिनी आँख जाती रही थी।

हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने उससे पूछा तुम अलग क्यों नहीं होते? कहा: ऐ रूहुल्लाह! मैंने महज़ पलक झपकने धर गुनाह किया था कि बिला इरादा एक ग़ैर मेहरम औरत के पाँव पर मेरी दायी नज़र पड़ गई थी तो मैंने इसे फोड़ दिया था। और अगर बायी नज़र से भी यही गुनाह सरज़द हो जाए तो इसे भी फोड़ डालूंगा।

उसकी दस्ताने अलम सुन कर हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम की आँखें भर आईं। और फ़रमाया तुम अल्लाह से दुआ करो क्यूंकि मुझसे ज़्यादा तुम्हें दुआ करने है हक़ है। चुनाँचे उसने अपने हाथ आसमान की तरफ़ बलन्द करते हुए कहा ऐ अल्लाह तुन्हे हमें पैदा किया और रिज़्क़ की किफ़ालत अपने ज़िम्मा ए करम पर रखी है लिहाज़ा हम पर मूसलाधार बारिश बरसा। अभी उसकी दुआ मुकम्मल भी न हो पाई थी कि अल्लाह त'आला ने बाराने रहमत का नुज़ूल फ़रमाया। लोगों ने अपनी खुश्क हलक़ तर की और खूब खूब सैराबी हासिल की। (      नौजवानों की हिकायत)

## हिकायत (2). फाहिशा औरत और बाहया नौजवान:

हज़रते अब्दुल्लाह बिन वहब रहमतुल्लाहि अलैह बयान फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल में एक नौजवान था जो अहले दुनियाँ से अलग थलग इबादत ख़ाने में अल्लाह की इबादत किया करता था। वो हर वक़्त यादे इलाही में मशगूल रहता। कुछ बद बातिन लोग इस नौजवान से हसद करने लगे और उन्होंने येह फ़ैसला किया कि जिस तरह भी हो इस नौजवान को ज़लील करके छोड़ेंगे।

इस तरह हासिदीन की ये जमा'अत हर वक़्त इस आबिद व ज़ाहिद नौजवान को ज़लील करने की फिक्र में सरगर्दां रहने

लगे। बिल आख़िर उनके गंदे ज़हनों में येह ख़याल आया कि फलाँ औरत जो बहुत ज़्यादा हसीनो जमील और फाहिशा है उसको लालच देकर इस बात पर राज़ी किया जाए कि वो इस आबिद नौजवान को अपने फ़ितने में मुब्तला करे।

चुनाँचे बदबख्तों की वो जमाअत इस फाहिशा औरत के पास आई और सब कहने लगे: अगर तू उस नौजवान को अपने फ़ितने में मुब्तला कर दे तो हम तुझे मालामाल कर देंगे। हमें उम्मीद है कि तू उसे ज़लीलो रुसवा करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी।

चुनाँचे वो फाहिशा औरत इस फे'ले मज़मूम के लिए तैयार हो गई और एक रात वो उस नौजवान के इबादत ख़ाने की तरफ चली। रात बहुत अंधेरी थी और ऊपर से बारिश हो गई। औरत ने उस नौजवान को पुकारा: ऐ अल्लाह के बंदे! मुझे पनाह दे।

नौजवान ने ऊपर से झाँका तो देखा कि एक जवान दोशीज़ा दरवाज़े पर खड़ी है और अंदर आने की इजाज़त माँग रही है। इस नौजवान ने सोचा कि इस वक़्त इतनी रात गए किसी ग़ैर मेहरम औरत को दाख़िले की इजाज़त देना ख़तरे से ख़ाली नहीं । चुनाँचे वो नौजवान वापस अंदर चला गया और नमाज़ में मशगूल हो गया।

औरत ने दोबारा निदा दी: ऐ अल्लाह के बंदे! बाहर बहुत ज़्यादा बारिश हो रही है और सदएँ भी शदीद है, खुदारा मुझे एक रात के लिए पनाह दे दे। बार बार वो औरत यही इल्तिजा करती रही। आख़िरकार नौजवान ने तरस खाते हुए उसे पनाह दे दी और खुद ज़िक्रो अज़कार में मशगूल हो गया।

फाहिशा औरत सीना खोले नीम उरियाँ हालत में इस नौजवान के

सामने आई और गुनाह की दावत देते हुए अपना आप उसके सामने पेश कर दिया। बाहया नौजवान ने फ़ौरन निगाहें झुका ली और उससे दूर हो गया। वो दोबारा उसके पास आई और गुनाह की दावत देने लगी। नौजवान ने कहा अल्लाह की क़सम मैं हरगिज़ येह गुनाह नहीं करूंगा जब तक मैं आज़मा न लूँ कि अगर मेरा नफ़्स गुनाह करे तो क्या वो इस गुनाह के बदले जहन्नम की आग बर्दाश्त कर लेगा।

फिर वो नौजवान जलते हुए चिराग़ की तरफ बढ़ा और अपनी उंगली उस पर रख दी यहाँ तक कि उंगली जल गई। फिर वो इबादत में मशगूल हो गया। फाहिशा औरत ने क़रीब आकर फिर उसे गुनाह की दावत दी तो नौजवान ने अपनी दूसरी उंगली भी जला डाली।

इस तरह वो फाहिशा औरत बार बार उसे गुनाह की दावत देती रही और वो नौजवान अपनी उंगलियाँ जलता रहा। बिल आख़िर इस पाक दामन, मुत्तक़ी और परहेज़गार नौजवान ने अपनी सारी उंगलियाँ जला डाली लेकिन ग़ैर मेहरम औरत की तरफ़ नज़र उठा कर भी न देखा। जब उस फाहिशा और ने येह सूरते हाल देखी तो कि इस नौजवान ने एक गुनाह से बचने के लिए अपनी सारी उंगलियाँ जला डाली हैं तो दहशत ज़दा होकर ग़श खाकर गिर पड़ी और तड़प तड़प कर मर गई। ( नौजवानों की हिकायत)

## हिकायत (3). इफ़्फ़त व पाकबाज़ी की क़ीमत :

क़ौमे बनी इस्राईल में एक निहायत शकील व रा'ना जवान था जो कुछ चीजें घूम फिर कर फ़रोख़्त करता और वही उसका ज़रिया ए

म'आश था। एक बार शाही महल के पास से गुज़रा। शहज़ादी की किसी सहेली ने उसे देखा और महल में जाकर उसे ख़बर दी कि मैंने आज ऐसा खूबसूरत नौजवान देखा है जैसा खूबसूरत कभी मेरी निगाहों से नहीं गुज़रा।

शहज़ादी ने कहा उसे अंदर बुलाओ और कहो कि हम उनका सामान खरीदेंगे। जब नौजवान महल में दाख़िल हुआ तो उसे अंदर ले जाकर दरवाज़े बन्द करवा दिए और अपनी बुरी नियत लिए उसके सामने आई। नौजवान ने कहा तुम अपनी ज़रूरत की चीज़ खरीद लो और मुझे जाने दो।

शहज़ादी ने कहा मुझे तुमसे अपनी ज़रूरत पूरी करनी है।

नौजवान ने कहा खुदा से ख़ौफ़ कर और इस इरादे से तौबा कर।

शहज़ादी ने कहा अगर तू मेरी बात नहीं मानेगा तो मैं बादशाह से कहूंगी कि यह बुरे इरादे से महल में आया था।

नौजवान ने कहा अच्छा ठीक है अगर तुम अपनी हरकत से बाज़ नहीं आती तो पहले मुझे वजू करने के लिए कही से पानी मंगवा दो।

शहज़ादी ने कहा मुझ से बहाना साज़ी न करो। फिर शहज़ादी ने बांदी से कहा इसके लिए छत पर वजू का इंतेज़ाम करो ताकि वहाँ से फ़रार न हो सके। महल की छत 40 ग़ज़ ऊंची थी।

नौजवान जब छत पर पहुँचा तो इल्तिजा की: बार इलाहा! मुझे बदकारी पर मजबूर किया जा रहा है। मगर मैं खुद को छत से गिरा देना गुनाह में मुब्तला होने से बेहतर समझता हूँ और फिर बिस्मिल्लाह पढ़ कर खुद को महल के बाहर गिरा दिया। मगर

अल्लाह की ऐसी मज़ऐं कि उसे ज़रा भी तकलीफ़ नहीं हुई क्यूंकि रब त'आला ने एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर दिया था जिसने उसे बाज़ू पकड़ कर ज़मीन पर ला खड़ा किया।

नौजवान ने बारगाहे खुदावन्दी में दुआ की: परवरदिगार अगर तू चाहे तो मुझे इस तिजारत के बग़ैर भी रोज़ी दे सकता है। चुनाँचे अल्लाह त'आला ने करम फ़रमाया और उसके लिए सोने की एक थैली धेज दी। उसमें से नौजवान ने अपना दामन धर उठा लिया और अर्ज़ किया या इलाही! अगर येह मेरी दुनियाँ की रोज़ी है तो मेरे लिए इसमें बरकत दे और अगर येह मेरे सवाब के बदले में है तो मुझे इसकी जरूरत नहीं ।

जवाब मिला छत से गिरते वक़्त जो सब्र तूने इख़्तियार किया था येह उसके सवाब के 25 हिस्सों का एक हिस्सा है। उस नौजवान के बारे में शैतान से पूछा गया कि तूने उसे छत पर बहकाया क्यूँ नहीं ? उसने कहा मैं उस जांबाज़ मर्द को भला क्या बहका सकता हूँ जिसने अल्लाह त'आला के लिए अपनी जान ही दाव पर लगा दी। ( नौजवानों की हिकायत)

## तौबा करने वाला जवान:

हज़रत अनस बिन मालिक रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: "बेशक अल्लाह तौबा करने वाले नौजवानों को महबूब रखता है"।

एक और हदीस में है कि हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "कोई भी चीज़ अल्लाह तआला के नज़दीक तौबा करने वाले नौजवान से बढ़कर पसन्दीदा नहीं

और कोई भी चीज़ अल्लाह तआला की बारगाह में इतनी ना - पसन्दीदा नहीं जितना कि वो बूढ़ा जो बुढ़ापे के बावुजूद गुनाहों पर अड़ा हुआ हो" ।

तौबा करने वाले तमाम लोगों से अल्लाह त'आला मुहब्बत फ़रमाता है लेकिन नौजवानी में तौबा करने वालों को ख़ास तौर से महबूब रखने की वजह ये है कि इस उम्र में तौबा करना हक़ीक़त में दिल गुर्दे का काम है क्योंकि इस उम्र में उमूमन आदमी ख़्वाहिशों व लज्ज़तों के नरगे में होता है ऐसे में ख़्वाहिशों और दुनियावी रंगीनियों को छोड़कर अल्लाह सुब्हानहू व त'आला की तरफ लौटना हक़ीक़त में बड़े नसीबे की बात है।
( तौबा की अहमियत किताब से)

---

अब कुछ तौबा करने वाले जवानों की हिकायत नक़ल करके तहरीर को इख़्तिताम किया जाता है :

## हिकायत (1). एक बदकार, नेकोकार बनने तक :

बनी इस्राईल में एक निहायत ही फ़ासिक़ व फाजिर इंसान था जो अपनी बदकारियों से कभी बाज़ न आता था। शहर वाले जब उसकी बदकारियों से आजिज़ आ गए तो अल्लाह त'आला से उसके शर से महफ़ूज़ रहने की दुआ माँगने लगे।

अल्लाह त'आला ने हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ वह्यी की कि बनी इस्राईल के फलाँ शहर में एक बदकार जवान रहता है उसे शहर से निकाल दीजिये ताकि उसकी बदकारियों की वजह से सारे शहर पर आग न बरसे।

हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम वहाँ तशरीफ़ ले गए और उसे उसकी बस्ती से निकाल दिया। फिर फ़रमाने इलाही हुआ कि उसे इस बस्ती से भी निकाल दीजिये।

जब हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम ने उसको उस बस्ती से भी निकाल दिया तो उसने एक ऐसी ग़ार पर ठिकाना बनाया जहाँ न कोई इंसान था न ही किसी चऋृरद व पऋृरद का गुज़र था। कुर्बो जवार में न कही आबादी थी न दूर दूर तक सब्ज़े का कही पता था।

उसी ग़ार में आकर वो जवान बीमार हो गया। उसकी तीमारदारी के लिए कोई शख्स भी उसके आस पास मौजूद न था जो उसकी ख़िदमत करता। ज़ौफ व नातवानी के बाइस ज़मीन पर गिर पड़ा और कहने लगा काश इस वक़्त मेरी माँ मेरे पास मौजूद होती तो मुझ पर शफ़क़त करती और मेरी इस बेबसी पर रोती। अगर मेरा बाप होता तो मेरी निगहदाश्त, निगहबानी और मेरी मदद करता। अगर मेरी बीवी होती तो मेरी जुदाई पर रोती।

अगर मेरे बच्चे इस वक़्त मौजूद होते तो कहते: ऐ परवरदिगार! हमारे आजिज़, गुनाहगार, बदकार और मुसाफ़िर बाप को बख़्श दे जिसे पहले तू शहर बदर किया फिर दूसरी बस्ती से भी निकाल दिया गया और अब वो ग़ार में भी हर एक चीज़ से नाउम्मीद होकर दुनियाँ से आख़िरत की तरफ़ चला है और वो मेरे जनाज़े के पीछे रोते हुए चलते।

फिर वो नौजवान कहने लगा: ऐ अल्लाह! तूने मुझे वालिदैन और बीवी बच्चों से तो दूर कर दिया है मगर अपने फ़ज़्लो करम से दूर न करना। तूने मेरे दिल को अज़ीज़ों की जुदाई में जलाया है अब मेरे सरापा को मेरे गुनाहों के सबब जहन्नम की आग में न

जलाना।

उसी दम अल्लाह तआला ने एक फरिश्ते को उसके बाप के हम शक्ल बना कर, एक हूर को उसकी माँ और एक हूर को उसकी बीवी के मुशाबे बनाकर और गिलमाने जन्नत को उसके बच्चों के रूप में भेज दिया। येह सब उसके करीब आकर बैठ गए और उसकी शदीद तकलीफ़ पर तअस्सुफ़ और आहो ज़ारी करने लगे।

जवान इन्हें देखकर बहुत खुश हुआ और इसी मसर्रत में उसका इंतेक़ाल हो गया। तब अल्लाह त'आला ने हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ वह्यी की कि फलाँ ग़ार की तरफ़ जाओ, वहाँ हमारा एक दोस्त मर गया है, तुम उसकी तकफीन और तदफीन का इंतेज़ाम करो।

हुक्मे इलाही से जब हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम ग़ार पर पहुँचे तो उन्होंने वहाँ उसकी जवान को मरा हुआ पाया जिसको उन्होंने पहले शहर और फिर बस्ती से निकाला था। उसके गिर्द हूरें ताज़ियत करने वालों की तरह बैठी हुईं थी।

मूसा अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ की: ऐ रब्बुल इज़्ज़त येह तो वही जवान है जिसे मैंने तेरे हुक्म से शहर और बस्ती से निकाल दिया था। रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रमाया: ऐ मूसा मैंने इसके बहुत ज़्यादा रोने और अज़ीज़ों की फ़िराक़ में बहुत ज़्यादा तड़पने की वजह से इस पर रहम कर दिया और फ़रिश्ते को इसके बाप और हूरो गिलमान को इसकी माँ, बीवी और बच्चों के हम शक्ल बना कर धेजा है जो गुरबत में इसकी तकलीफ़ों पर रोते हैं। जब येह मरा तो इसकी बेचारगी पर ज़मीनो आसमान रोए और मैं अरहमर्राहिमीन क्यूँ न इसके गुनाहों को म'आफ़ करता।

## हिकायत (2). अब्बासी शहज़ादे की तौबा:

एक आदमी के घर की दीवार गिर गई उसे जल्द से जल्द दीवार बनवाने की फिक्र लाहिक हुई। लिहाज़ा उसे बनवाने के लिये मज़दूर की तलाश में घर से निकला। चौराहे पर उसने मज़दूरों को देखा जो काम के इन्तिज़ार में बैठे थे । उनमें एक नौजवान भी था जो सबसे अलग थलग खड़ा था । उसके एक हाथ में थैला और दूसरे हाथ में हथौड़ा था । उस शख़्स का कहना है कि मैंने उस नौजवान से पूछा: "तुम मज़दूरी करोगे ?" नौजवान ने जवाब दिया: "हाँ!" मैंने कहा: "दीवार बनानी होगी।" नौजवान कहने लगा: "ठीक है! लेकिन मेरी शर्ते हैं, अगर तुम्हें मन्जूर हों तो मैं काम करने के लिये तैयार हूँ: पहली शर्त ये है कि तुम मेरी मज़दूरी पूरी अदा करोगे, दूसरी शर्त ये है कि नमाज़ के वक्त मुझको नमाज़ पढ़ने से नहीं रोकोगे।" मैंने उसकी शर्तें मान ली और साथ लेकर घर आ गया फिर उसे काम बताकर किसी काम से बाहर चला गया। जब शाम के वक्त वापस आया तो देखा कि उसने आम मजदूरों से दोगुना काम किया है, मैंने खुशी खुशी उसकी मज़दूरी अदा की और वो चला गया। दूसरे दिन फिर मैं उस नौजवान की तलाश में चौराहे पर गया लेकिन वो मुझे नज़र नहीं आया। मैंने दूसरे मज़दूरों से उसके बारे में दरयाफ्त किया तो उन्होंने बताया कि वो हफ्ते में सिर्फ एक दिन मज़दूरी करता है। ये सुनकर मैं समझ गया कि वो आम मज़दूर नहीं बल्कि कोई बड़ा आदमी है।

मैंने उनसे उसका पता मालूम किया और उस जगह पहुँचा तो देखा कि वो ज़मीन पर लेटा हुआ था और उसे सख़्त बुखार था।

मैंने उससे कहा: "अगर पसन्द करो तो मेरे साथ मेरे घर चलो और मुझे अपनी ख़िदमत का मौका दो ।" उसने इन्कार कर दिया फिर भी मेरे मुसलसल इसरार पर मान गया लेकिन एक शर्त रखी कि मुझसे खाने की कोई चीज़ नहीं लेगा। मैंने उसकी ये शर्त मन्जूर कर ली और उसे अपने घर ले आया । वो तीन दिन मेरे घर रहा लेकिन उसने न तो किसी चीज़ का मुतालबा किया और न ही कोई चीज़ लेकर खाई। चौथे रोज़ उसके बुखार में शिद्दत आ गई तो उसने मुझे बुलाया और कहने लगा: "मेरे भाई! लगता है कि अब मेरा आख़री वक्त करीब आ गया है लिहाजा जब मैं मर जाऊँ तो मेरी इस वसीयत पर अमल करना: "जब मेरी रूह जिस्म से निकल जाए तो मेरे गले में रस्सी डालना और घसीटते हुए बाहर ले जाना और अपने घर के इर्द गिर्द चक्कर लगवाना और कहना: लोगो ! देख लो अपने रब की ना - फरमानी करने वालों का ये हश्र होता है।" शायद इस तरह मेरा रब मुझे माफ़ करे । फिर जब तुम मुझे गुस्ल दे चुको तो मुझे इनहीं कपड़ों में दफ़्न कर देना फिर बग़दाद में खलीफा हारुन रशीद के पास जाना और ये कुरआन मजीद और अंगूठी उन्हें देना और मेरा ये पैग़ाम भी देना कि "अल्लाह से डरो! कही ऐसा न हो कि ग़फ़लत और नशे की हालत में मौत आ जाए और बाद में पछताना पड़े फिर उससे कुछ हासिल न होगा।" नौजवान मुझे वसीयत करने के बाद इन्तिकाल कर गया। मैं उसकी मौत के बाद काफी देर तक आँसू बहाता रहा और ग़मजदा रहा। फिर (न चाहते हुए भी) मैंने उसकी वसीयत पूरी करने के लिये एक रस्सी ली और उसकी गर्दन में डालने का इरादा किया तो कमरे के एक कोने से आवाज़ आई "इसके गले में रस्सी मत डालना, क्या अल्लाह के वली के साथ ऐसा सुलूक किया जाता है?" ये आवाज़ सुनकर मेरे बदन पर कपकपी तारी हो गई। फिर उसके

कफन व दफ़न का इन्तिज़ाम करने के लिये मैं चला गया। उसकी तदफीन से फारिग होने के बाद मैं उसका कुरआने पाक और अंगूठी लेकर खलीफा के महल की तरफ गया। वहाँ जाकर मैंने उस नौजवान का वाकिया एक कागज़ पर लिखा और महल के दारोगा से इस सिलसिले बात करना चाहा तो उसने मुझे झिड़क दिया और अन्दर जाने की इजाज़त देने के बजाय अपने पास बिठा लिया।

आख़िरकार ! ख़लीफा ने मुझे अपने दरबार में बुलाया और कहने लगाः "क्या मैं इतना ज़ालिम हूँ कि मुझसे डारेक्ट बात करने के बजाय ख़त का सहारा लिया?" मैंने अर्ज़ कीः "अल्लाह तआला आपका इक़बाल बुलन्द करे, मैं किसी जुल्म की फरयाद लेकर नहीं आया बल्कि एक पैग़ाम लेकर हाज़िर हुआ हूँ।" खलीफा ने उस पैग़ाम के बारे में दरयाफ्त किया तो मैंने वो कुरआन मजीद और अँगूठी निकालकर उसके सामने रख दी। खलीफा ने इन चीज़ों को देखते ही कहाः "ये चीजें तुझे किसने दी हैं?" मैंने अर्ज़ कियाः "एक गारा बनाने वाले मज़दूर ने.... " खलीफा ने इन अलफ़ाज़ को तीन मरतबा दोहरायाः "गारा बनाने वाला, गारा बनाने वाला..... और रो पड़ा।" काफ़ी देर रोने के बाद मुझसे पूछाः "वो गारा बनाने वाला अब कहाँ है?" मैंने जवाब दियाः "वो मज़दूर फ़ौत हो चुका है।" ये सुनकर खलीफा बेहोश होकर गिर गया और अस्र तक बेहोश रहा। मैं इस दौरान हैरानो परेशान वहल मौजूद रहा। फिर जब खलीफा को कुछ इफ़ाक़ा हुआ (यानी होश आया) तो मुझसे दरयाफ्त कियाः "उसकी वफात के वक़्त तुम उसके पास थे?" मैंने हाँ में सर हिला दिया तो कहने लगाः "उसने तुझे कोई वसीयत की थी?" मैंने उसे नौजवान की वसीयत बताई और पैग़ाम भी दिया जो उस नौजवान ने खलीफा

के लिये छोड़ा था। जब खलीफा ने ये सारी बातें सुनी तो और भी ग़मगीन हो गया और अपने सर से इमामा उतार दिया, अपने कपड़े चाक कर डाले और कहने लगाः "ऐ मुझे नसीहत करने वाले ! ऐ मेरे ज़ाहिद व पारसा! ऐ मेरे शफीक !". .......इस तरह के बहुत से अलकाबात खलीफा ने उस मरने वाले नौजवान को दिये और मुसलसल आँसू बहाता रहा। ये सारा मामला देख मेरी हैरानी व परेशानी में और भी इजाफा हो गया कि खलीफा एक आम मजदूर के लिये इतना ग़मज़दा क्यों है? जब रात हुई तो खलीफा ने मुझसे उसकी कब्र पर ले जाने की ख़्वाहिश जाहिर की तो मैं उसके साथ हो लिया । खलीफा चादर में मुँह छिपाए मेरे पीछे पीछे चलने लगा, जब हम कब्रिस्तान पहुँचे तो मैंने एक कब्र की तरफ इशारा करके कहाः " आली जनाब! ये उस नौजवान की कब्र है।" खलीफा उसकी कब्र से लिपटकर रोने लगा फिर कुछ देर रोने के बाद उसकी कब्र के सिरहाने खड़ा हो गया और मुझसे कहने लगाः "ये नौजवान मेरा बेटा था, मेरी आँखों की ठण्डक और मेरे जिगर का टुकड़ा था, एक दिन ये रक्सो सुरुर (डान्स) की महफिल में गुम था कि मकतब में किसी बच्चे ने ये आयत तिलावत कीः "क्या ईमान वालों के लिये अभी वो वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के लिये झुक जाएँ" जब उसने ये आयत सुनी तो अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से थरथर काँपने लगा और उसकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई और ये पुकार पुकारकर कहने लगाः "क्यों नहीं ? क्यों नहीं ?" ये कहते हुए महल के दरवाज़े से बाहर निकल गया । उस दिन से हमें उसके बारे में कोई ख़बर न मिली यहाँ तक कि आज तुमने उसकी वफ़ात की ख़बर दी। ( तौबा की अहमियत)